# भूपेन हजारिका

# भूपेन हजारिका

सुमित कुमार

# भूपेन हजारिका

## एक कली दो पत्तियाँ...

**एक कली दो पत्तियाँ**
**नाजुक-नाजक अंगुलियाँ...**

**ये** पंक्तियाँ पढ़ते ही अचानक भूपेन हजारिका का गुरु गंभीर स्वर कानों में गूँज उठता है। अपनी स्वरलहरियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने की क्षमता रखनेवाले भूपेन हजारिका का नाम किसी परिचय की आकांक्षा नहीं रखता। भूपेन हजारिका ऐसे लोकनायक थे, जिनके गीत पूर्वोत्तर भारत की जनता की धमनियों में रक्त के साथ घुले हुए हैं।

भूपेन हजारिका विभिन्न भावों में

अपने लोकसंगीत व गीतों के माध्यम से असम की आत्मा को जन-जन तक पहुँचाने वाले 'ब्रह्मपुत्र के कवि' भूपेन हजारिका भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम से थे। यदि हम भूपेन दा के बहुआयामी व्यक्तित्व के विषय में बताना चाहें तो कहना होगा कि वे एक गायक, कवि, संगीतकार, पत्रकार, साहित्यकार, फिल्म निर्देशक, पटकथा लेखक व चित्रकार थे। किसी एक व्यक्ति में इतने गुणों व प्रतिभा का समावेश सुनने में भले ही विचित्र लगे, किंतु भूपेन हजारिका ऐसा ही एक नाम थे, जिन्होंने साहित्य, संगीत, लेखन, काव्य, निर्देशन व पत्रकारिता आदि विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का अपूर्व परिचय दिया।

उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से असमी सभ्यता, संस्कृति, लोकपरंपरा, जीवन के प्रत्येक पक्ष व समसामयिक जीवन को भी गीतों में गूँथकर हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। वे स्वयं को एक 'यायावर' कहलाना पसंद करते थे। एक ऐसा यायावर, जिसके लिए सारी पृथ्वी ही अपना घर हो जाती है और मानवता का दु:ख उसका अपना दु:ख।

**अपनी संगिनी कल्पना लाजमी के साथ**

डॉ. भूपेन हजारिका का जन्म 8 अगस्त, 1926 को असम राज्य के तिनसुकिया जिले के सदिया नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता नीलकांत हजारिका ने गुवाहाटी के कॉटन कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी। नीलकांत अपने सहपाठी अनाथबंधु दास के घर में रहते थे। अनाथबंधु अच्छे गायक और संगीतकार थे। वह सितार बजाते थे। टायफाइड की वजह से केवल 23 वर्ष की उम्र में अनाथ बंधु की मृत्यु हो गई। नीलकांत का विवाह अपने मित्र की बहन शांतिप्रिया से हुआ और विवाह के दो वर्ष पश्चात् भूपेन का जन्म हुआ। नीलकांत उन दिनों सदिया में ही शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। जीवनीकार लिखते हैं कि महान् संगीतकार के जन्म के समय चिकित्सक के सम्मुख दुविधा खड़ी हो गई थी कि वह प्रसवपीड़ा से क्लांत माँ की प्राणरक्षा करे या बड़े सिर वाले नवजात के प्राण बचाए, किंतु ईश्वर की ऐसी कृपा रही कि माँ व शिशु दोनों को ही बचा लिया गया। उन दिनों सदिया एक दुर्गम क्षेत्र था, जहाँ अनेक आदिवासी जनजातियाँ रहती थीं। शिक्षक नीलकांत के साथ उनके आत्मीय संबंध थे, अत: उनके घर जनमा नन्हा सा शिशु सभी के लिए स्नेह का पात्र था। जनजातीय लड़कियाँ प्राय: उनके यहाँ घरेलू कामकाज के लिए आतीं और नन्हा भूपेन उनके साथ खेलता। एक बार वे नन्हे बालक को अपने साथ अपनी बस्ती में ले गईं और साँझ तक नहीं लौटीं। साँझ भी बीत गई। रात का अंधकार घना होता चला गया, पर वे भूपेन के साथ नहीं लौटीं। माँ व्याकुल थीं, क्योंकि अभी बालक स्तनपान करता था। उसके भूख से बिलखने की कल्पना ही उन्हें सता रही थी, किंतु अगली सुबह उन लड़कियों के साथ हँसता-खिलखिलाता भूपेन लौटा तो पता चला कि कल उसे बस्ती की महिलाओं ने अपना स्तनपान कराया था। इस प्रकार सदिया के उस निश्चल व आत्मीयता से पूर्ण परिवेश में भूपेन का बचपन बीता।

**कल्पना लाजमी**

भूपेन ने बचपन में ही अपना पहला गीत लिखा और दस वर्ष की आयु में उसे गाया भी। अपने आसपास के वातावरण ने ही उनमें लोकसंगीत के प्रति रुझान पैदा किया, क्योंकि वे उसी के बीच बड़े हुए थे। वे आदिवासी संगीत को ही अपने गायन का श्रेय देते थे। अपनी माँ की लोरियों से भी उन्हें गायन की प्रेरणा मिली। उनकी माँ बड़ी मीठी लोरियाँ सुनाती थीं। बाद के वर्षों में उन्होंने फिल्म 'रुदाली' में उस लोरी का उपयोग भी किया था।

युवा भूपेन हजारिका वाद्य यंत्र पर अभ्यास करते हुए

स्वयं अपने गीत लिखकर, उन्हें गीत बताकर गानेवाले भूपेन ने 'विश्व निजॉय नोजवान' में पहला गान गाया और फिर इसके बाद संगीत और भूपेन मानो परस्पर पर्याय हो गए। उन्होंने असमिया चलचित्र की दूसरी फिल्म 'इंद्रमालती' के लिए भी कार्य किया। तेरह वर्ष की आयु में तेजपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे आगे की शिक्षा के लिए गुवाहाटी चले गए। सन् 1942 में वहाँ के कॉटन कॉलेज से इंटरमीडिएट करने के बाद उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एम.ए. किया। आगे की पढ़ाई के लिए वे विदेश भी गए तथा कोलंबिया विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उन्हें शिकागो विश्वविद्यालय ने भी फेलोशिप प्रदान की। वे दक्षिण एशिया के सांस्कृतिक राजदूत कहलाते थे।

एक कार्यक्रम में संगीत सम्राट् सम्मान प्राप्त करते हुए

हाई स्कूल में पढ़ते समय भूपेन गीतों की रचना कर गाने लगे थे। इस दौरान उन्होंने अपने पिता के लिखे गीतों को भी गाया था। सन् 1948 में उन्होंने असमिया फिल्म 'सिराज' के लिए दो गीत गाए और अभिनय भी किया।

युवावस्था में भूपेन जहाँ स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े, वहीं उन्होंने सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को महसूस करते हुए कई अमर गीतों की रचना की।

1948 में जब गुवाहाटी में आकाशवाणी केंद्र की स्थापना हुई तो भूपेन को जन-जन तक अपने गीतों को पहुँचाने का अवसर मिला। उन्होंने सामाजिक समरसता, मानवता और भाईचारे जैसे विषयों पर गीतों की रचना की।

हजारिका एक ग्रामीण मूल के व्यक्ति थे और उन्हें अपने गाँव जाना सदैव प्रिय रहा है।

भूपेन ने संगीत को समाज-परिवर्तन का हथियार मान लिया था। उनके गुरु विष्णुरामा वामपंथी क्रांतिकारी थे। उनसे प्रभावित होकर भूपेन ने हारमोनियम उठा लिया और जनता के बीच समानता और साम्यवाद के संदेशवाले गीत गाने लगे। भूपेन के गीतों में मानवीय संवेदनाओं का गहरा प्रभाव था। वे प्रेम और हृदय-परिवर्तन के जरिए समाज-परिवर्तन का संदेश दे रहे थे।

भूपेन हजारिका

एक वाद्य यंत्र बजाते हुए।

भूपेन दा अपनी मूल भाषा असमिया के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला व अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में गाते थे। उनके गीतों में दिलों को छू लेनेवाला जादू था। जो भी सुनता, हमेशा के लिए भूपेन के सुरों का दीवाना हो जाता। उन्होंने फिल्म 'गांधी टू हिटलर' में गांधीजी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने' भी गाया था।

**अपनी पहली म्यूजिक वीडियो का लोकार्पण करते हुए डॉ.भूपेन हजारिका**

1949 में अमेरिका जाने पर भूपेन की जीवन-दृष्टि का विस्तार हुआ। वहाँ उनका परिचय जनगायक पॉल रॉबसन से हुआ। अमेरिका में ही उन्होंने एक डॉक्टर की पुत्री प्रियंका पटेल से विवाह किया। मगर यह विवाह सफल नहीं हुआ और दोनों का संबंध विच्छेद हो गया। दांपत्य जीवन की संक्षिप्त अवधि में तेज हजारिका नामक पुत्र का जन्म हुआ।

**उस समय के असम के मुख्यमंत्री के साथ भूपेन**

अपने अमेरिका प्रवास के दौरान ही भूपेन की भेंट सुप्रसिद्ध अश्वेत गायक पॉल रोबिंसन से हुई। उन्होंने उनके गीत 'ओल्ड मैन रिवर' को 'ओ गंगा बहती हो' के रूप में इतने सुंदर तरीके से रूपांतरित किया कि सभी अभिभूत हो उठे।

सन् 1953 में भूपेन अमेरिका से असम लौटे। वे अपने साथ कई तकनीक और शैली भी लेकर आए थे, जिनकी मदद से उन्होंने यादगार गीतों की रचना की और असम में मनोरंजन जगत् के सम्राट् बन गए।

भूपेन को अपने बौद्धिक एवं कलात्मक विकास के लिए असम का दायरा सीमित नजर आने लगा और वे सन् 1957 में कोलकाता में रहने के लिए चले गए, जहाँ उन्होंने कम समय के भीतर ही अपने गीतों का बँगला अनुवाद जादुई आवाज में गाते हुए अपार लोकप्रियता हासिल कर ली।

'असमिया जाति' के कलेजे के टुकड़े भूपेन हजारिका नहीं रहे। स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर ने कहा—उनके गीतों में मानवता और प्रेम का संदेश समाज के हर वर्ग के श्रोता को अपनी तरफ आकर्षित करता था। कोलकाता में रहते हुए भूपेन असमिया और बँगला फिल्मों के लिए संगीतकार की भूमिका निभाते रहे।

अपने एक फेन के साथ भूपेन

इसी दौरान उनके माता-पिता और छोटे भाई जयंत हजारिका का निधन हुआ। पत्नी एकमात्र पुत्र को लेकर हमेशा के लिए उनका साथ छोड़कर चली गई।

चीन के हमले ने मार्क्सवाद के प्रति उनकी आस्था को प्रभावित किया। व्यक्तिगत त्रासदियों के बावजूद इस अवधि में भूपेन पूर्वोत्तर भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय जनगायक बन चुके थे।

रुत्बेदार भूपेन

कोलकाता में रहते समय ही भूपेन के जीवन में कल्पना लाजमी आईं। दोनों ने विवाह किए बगैर 'लिव इन रिलेशनशिप' कायम रखा। कल्पना लाजमी ने हिंदी फिल्म 'रुदाली' बनाकर भूपेन की प्रतिभा का परिचय हिंदी भाषी जगत् से करवाया। 'दिल हूम-हूम करे' गाना देश-विदेश में लोकप्रिय हो गया।
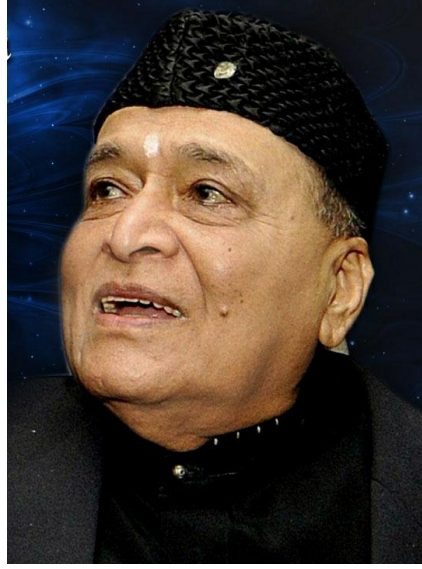
**डॉ. भूपेन हजारिका वृद्धावस्था में**

भूपेन हजारिका की स्वर-साधना के कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें 1975 में सर्वोत्कृष्ट क्षेत्रीय फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1992 में वे सिनेमा-जगत् के सर्वोच्च पुरस्कार कहलाने वाले दादा साहब फाल्के सम्मान से नवाजे गए। 'असोम रत्न' व 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' के बाद 2011 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. भूपेन हजारिका इन पुरस्कारों से सम्मानित नहीं हुए, अपितु उन्हें दिए जाने से इन पुरस्कारों का गौरव और भी बढ़ गया। वे 1967 से 1972 के बीच असम विधानसभा के सदस्य भी रहे।

असम का 'स्वर्ण स्वर' के नाम से विख्यात भूपेन हजारिका ने अपने गीतों में प्रेम, विषाद, करुणा व विरह आदि सभी रसों को घोला है और रसिकजन उनके गीतों का आस्वादन करते नहीं अघाते। उन्होंने केवल असम की ही नहीं, बल्कि आसपास के राज्यों जैसे राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ आदि की लोकधुनें भी अपने गीतों में पिरोईं और एक-से-एक नायाब मोती बिखेरते चले गए। उन्होंने 'गजगामिनी', 'दमन', 'क्यों', 'रुदाली', 'एक पल' आदि हिंदी फिल्मों में अपना संगीत दिया, जो आज भी अपने उत्कृष्ट गीतों के लिए जानी जाती हैं।

चौरासी वर्ष की आयु तक सक्रिय रूप से कार्य करने के बाद वर्ष 2011 में वे बीमार पड़े और उन्हें मुंबई के कोकिला बेन अस्पताल में ही करीब चार माह तक आई.सी.यू. यूनिट में रखा गया। उन्होंने वहीं अपना जन्मदिन भी मनाया। निमोनिया के कारण उनके शरीर के कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था और वे जीवनरक्षक उपकरणों पर जीवित थे। आखिरकार 5 नवंबर, 2011 को पचासी वर्ष की आयु में वे चल बसे। उनके साथ अंतिम क्षणों में कल्पना लाजमी भी उपस्थित थीं। यह समाचार पाते ही वह पल भर के लिए तो स्तब्ध हो उठीं।

उनका निधन पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति था। असम के अखबारों ने समाचार का शीर्षक लगाया —'दूसरा भूपेन हजारिका पैदा नहीं हो सकता।' सभी संगीतकारों, राजनीतिज्ञों, फिल्मी हस्तियों व संगीत जगत् से जुड़े लोगों ने इस बहुमुखी प्रतिभा के निधन पर शोक प्रकट किया और कहा कि ब्रह्मपुत्र का स्वर शांत हो गया है।

मुंबई से भूपेन का नश्वर शरीर असम लाया गया। समूचे पूर्वोत्तर में शोक की लहर दौड़ गई। गुवाहाटी के जजेज फील्ड में उनके नश्वर शरीर को दर्शनार्थ रखा गया। लाखों लोग अंतिम दर्शन के लिए उमड़ पड़े। उनकी अंत्येष्टि

राजकीय सम्मान के साथ गुवाहाटी विश्वविद्यालय परिसर में की गई।

तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भूपेन हजारिका के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि डॉ. हजारिका के निधन से देश ने अपना एक महत्त्वपूर्ण कलाकार खो दिया। उनकी प्रतिभा केवल संगीत एवं साहित्य तक सीमित नहीं थी, बल्कि अभिनय, फिल्म निर्देशन आदि तमाम क्षेत्रों में भी अपनी उपलब्धियों के साथ वे एक संपूर्ण व्यक्तित्व थे।

विभिन्न असमी गायक डॉ. भूपेन हजारिका को श्रद्धांजलि देते हुए

फिल्म रुदाली के लिए उनका गीत 'दिल हूम हूम करे...' भला कौन भुला सकता है। 'ऊँचे नीचे रास्तों पर काँधे लिये जाते हैं...राजा-महाराजाओं का डोला, डोला...रे डोला...' हो या फिर उनके भावपूर्ण स्वर में गाया गया प्रिय गीत 'सागर संगम में कितना तैरा मैं...फिर भी मैं थका नहीं...।' सभी गीत केवल यही सोचने पर विवश कर देते हैं कि क्या कभी उनके निधन से बने शून्य को भरा जा सकेगा?

डॉ. भूपेन हजारिका की अंत्येष्टि के दिन

**—रचना भोला 'यामिनी'**

❑❑❑